मोहन राकेश की कहानियों में चित्रित दांपत्य जीवन की विकृतियाँ

प्रा. नितीन विठ्ठल पाटील
विठ्ठलराव पाटील महाविद्यालय,कळे,
तहसील-पन्हाळा, जिला-कोल्हापुर

मोहन राकेश जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य को समृध्द करने में योगदान दिया है। बदलते मानवीय मूल्यों का पर्दाफाश इन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से किया है। उनकी समस्त रचनाएँ पाठक को सोचने के लिए मजबूर करती है। मोहन राकेश जी ने हिंदी कथा साहित्य को परंपरागत रूढियों से आजाद कर एक नई सोच विकसित करने का प्रयास किया है। इसीके चलते नई कहानी आंदोलन में राकेश जी का नाम अग्रिम पंक्ति में आता है। अपनी कहानियों के माध्यम से बिगडते मानवीय संबंधों की भयावहता को चित्रित किया है। नगरीय जीवन इनकी कहानियों का मूल केंद्र ही रहा है। इनकी ज्यादातर कहानियाँ मध्यवर्गीय पारिवारिक समस्याओं का चित्रण करनेवाली है।

राकेश जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से युगीन समस्याओं का पर्दाफाश किया है। साथ में सामाजिक बिखराव और मनुष्य की मानसिक परेशानियों को एक सशक्त स्वर देने का काम भी किया है। आज मनुष्य नैतिक मूल्यों को तिलांजली देकर अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी करने को तैयार है। आधुनिक युग में मानवीयता, नैतिकता दर बदर ठोकरें खाती दिखाई दे रही है। पैसों का प्रभाव मनुष्य जीवन को तहस नहस कर रहा है। इन विपरीत स्थितियों को राकेश जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से रेखांकित किया है। वे अपने बदलते परिवेश के प्रति जागरूक दिखाई देते हैं। डॉ. धनंजय वर्मा इस संबंध में लिखते हैं – "इनकी कहानियों में युग के सामाजिक यथार्थ और वस्तु सत्य के संदर्भ में जीवन की बहुत तल्ख प्रतिक्रिया बदलते हुए विश्वासों को गति देती चेतना और एक संक्रमणशील दृष्टि मिलती है, लेकिन मूल्यों की इस संक्रांति में भी विघटन और ध्वंश की गति और टूटते ढहते विश्वासों की कगारों पर भी एक आंतरिक मानवीय आस्था और निष्ठा एवं दृष्टि का संकेत भी उनकी कहानियों में मिलता है।"[1] इससे हमें यह समझ में आता है कि मोहन राकेश की कहानियाँ मानवीय क्रिया और प्रतिक्रियाओं को प्रकट करनेवाली है।

प्राचीन समय से भारत में विवाह को एक पवित्र बंधन मानने की परंपरा रही है। लेकिन आधुनिक समय में इसकी मान्यताओं और विश्वासों के संदर्भ बदल चुके हैं। लोगों को आज विवाह एक बोझ महसूस होने लगा हैं। कोई भी परिवार पति–पत्नी के मजबूत रिश्ते से जुडा रहता है। इसे हम एक सफल दांपत्य जीवन भी कह सकते हैं। लेकिन आज इन संबंधों में ऊबाउपन दिखाई देने लगा है। पती और पत्नी अपने वैवाहिक जीवन को अलग–अलग रूप में देखने लगे हैं। पति–पत्नी के बदलते भूमिकाओं के कारण दांपत्य जीवन में अलगाव की स्थिति पैदा हो चुकी है। मोहन राकेशजी के अनुसार "विवाह नाम की संस्था अनेक दबावों के कारण टूट रही है। इसमें बडे कारण पति–पत्नी के बीच उभरता वैमनस्य और आर्थिक स्वतंत्रता की मांग, विषम संतुलन और पारस्पारिक असामंजस्य ही रहा है, जो विवाह के इन दो यूनिटों को एक दूसरे से अलग कर रहा है।"[2] पति–पत्नी के बीच बनते–बिगडते हालातों को राकेश जी ने अपने कहानियों के माध्यम से चित्रित किया है।

आज मनुष्य जैसे–जैसे आधुनिक होता चला जा रहा है, वैसे–वैसे उसके अंदर की अहं भावना जागृत हो रही है। इसी अहं के चलते कितने दांपत्य जीवन टूटकर बिखर रहे हैं। पति–पत्नी के बीच एक तनाव का माहौल बना हुआ है। 'एक और जिंदगी' पति–पत्नी के बीच के अहंभाव को चित्रित करनेवाली राकेशजी की कहानी है। इस कहानी का नायक प्रकाश है जो लडकी बीना के साथ विवाह करता है। लेकिन यह प्रेम का बंधन धीरे–धीरे टूटने लगता है। दोनों पति–पत्नी शिक्षित है साथ में नाकरी भी करते है, जिसके कारण दोनों में अहंभाव जागृत हो जाता

है। विवाह के कुछ दिनों के बाद दोनों एक दूसरे से अलग रहने लगते हैं। दोनों भी खुद के अस्तित्व को तलाशने में लगे रहते हैं। बच्चे के पहले जन्मदिन पर भी दोनों के संबंध लडखडाने लगते है। दोनों भी अपने अहं और जिद के कारण समझौता नहीं कर पाते है। खुद प्रकाश दुसरी शादी करने के बारे में सोचने लगता है। वह अपने बच्चे को लेकर भी भावुक नहीं होता है। प्रकाश सोचता है कि, "मन में इतना ही सोच लेना होगा कि इस बच्चे के साथ कोई दुर्घटना हो गई थी।"[3] वह निर्मला के साथ दूसरा विवाह करता है। लेकिन वह संबंध भी लंबे समय तक टिक नहीं पाते हैं। झूठे अहंम् को अपनाकर प्रकाश, बीना और निर्मला तीनों जिंदगी को गलत पटरी पर ढकेल देते है। 'गुंझल' कहानी के पति–पत्नी चंदन और कुंतल के संबंध भी कुछ इसी टाइप के है। देखने में तो दोनों एक साथ रहते है लेकिन दोनों में एकवाक्यता थोडी भी नहीं है। कुंतल अपने पति चंदन से अपना अस्तित्व अलग खोजने में लगी हुई है। चंदन के साथ रहकर वह अपने इच्छाओं को दबा रही है ऐसा उसे महसूस होने लगता ह। वह सोचती है – "क्या उसने कभी सोचा था कि उसे जीवन में अपने ही अंदर के संघर्ष से इस तरह पिसना पडेगा ? कहाँ युनिवर्सिटी के वे दिन, जीने का वह उत्साह और मन की बडी–बडी आकांक्षाएँ, और कहाँ आज की यह घिसटती छटपटाती जिंदगी।"[4] शादी के बाद भी कुंतल स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है। किसी के बंधन में रहना उसे स्वीकार नहीं है। अहंवादी भावना और अस्तित्व रक्षा के चलते दांपत्य जीवन किस तरह जटिल होता चला जा रहा है, यह हमें यहाँपर पता चलता है।

समय आज तेजी से बदल रहा है। विभिन्न स्थितियों के चलते मनुष्य की आकांक्षाओं में परिवर्तन होने लगा है। आज हर कोई पैसा, पद और प्रतिष्ठा प्राप्त करने में लगे हुए हैं। जिसके चलते पति–पत्नी दोनों भी खुद को व्यस्त रखने लगे हैं। 'फौलाद का आकाश' कहानी इसी सोच को लेकर राकेश जी ने लिखी है। इस कहानी में रवि और मीरा एक दूसरे को चाहते हैं। बाद में दोनों विवाह कर लेते हैं। लेकिन विवाह के उपरांत रवि के स्वभाव में बदलाव आने लगता है। वह केवल व्यवसाय के बारे में सोचने लगता है। मीरा ने विवाह के पहले जो सपनों की दुनिया बनायी थी, वह अब धीरे–धीरे बिखरने लगती है। रवि धीरे–धीरे अपनी व्यस्तताओं के कारण मीरा से भावनिक रूप में दूर होने लगता है। मीरा को इस संबंध में लगता हैं – "जब रवि बोलता है तो उसकी बातों में शब्द कम और आंकडे ज्यादा होते। आंकडे, आंकडे, आंकडे ! क्या बिना आंकडों के रवि कोई बात सोच ही नहीं सकता था ? मीरा को लगता था कि उससे प्यार करते वक्त भी वह मन ही मन चुंबनों की गिनती करता रहता होगा।"[5] रवि केवल स्वार्थी और पक्का व्यावसायिक बन चुका है। मीरा को वह केवल एक वस्तु के रूप में देख रहा है। उसमें भावनात्मकता के लिए कोई स्थान नहीं है। रवि अपने कैरियर को बचाने के लिए अपनी पत्नी की इज्जत भी दांव पर लगा देता है। इसमें उसे शर्म महसूस नहीं होती है। 'आखिरी सामान' इस कहानी में भी मि. भंडारी अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए अपनी पत्नी को उच्चाधिकारी की वासना का शिकार बनाना चाहता है। लेकिन इससे मिसेज भंडारी बच जाती है। दोनों में फिर दिनों दिन दूरिया बढती रहती है। यहाँपर अति महत्वाकांक्षाओं के चलते दांपत्य जीवन किस तरह प्रभावित हो रहा है उसका विवेचन राकेश जी के कहानियों में मिलता है।

पारिवारिक जीवन सुखमय होने के लिए पति–पत्नी के स्वभाव में साम्यता होनी चाहिए। थोडा बहुत वैचारिक अंतर हो सकता है लेकिन सामंजस्य बनाए रखना बहुत जरूरी होता है । आज कल हम देखते है कि प्रत्येक स्त्री–पुरूष अपने–अपने उद्देश्यों के रास्ते पर चलते है। जब ऐसे स्त्री–पुरूष विवाह के बंधन में बंध जाते है तो दांपत्य जीवन में विकृतियाँ आने लगती है। 'सुहागिने' इस कहानी में पति सुशील पत्नी मनोरमा से घर खर्च में सहायत्ता चाहता है। पत्नी भी यदि कमाकर लाती है तो उसे लगता है कि घर खर्चे का थोडा उसका बोझ हलका हो जाएगा। लेकिन पत्नी मनोरमा इस बात से सहमत नहीं है। वह केवल गृहस्थी और बच्चों को संभालना चाहती है। किंतु सुशील एक व्यावहारिक इन्सान है, वह मनोरमा की इच्छाओं की अवेहलना करता है। मनोरमा अपने अंदर एक बच्चे को महसूस करती है। "कल्पना में अपने को एक छोटे बच्चे को अपने में लिए हुए देखती और पुलकित हो उठती। उसे आश्चर्य होता कि क्या सचमुच एक हिलती डुलती काया उसके शरीर से

जन्म ले सकती है। कितनी ही बार वह सुशील से कहती थी कि वह इस आश्चर्य को अपने अंदर अनुभव करके देखना चाहती है मगर सुशील इसके हक में नहीं था। वह नहीं चाहता था कि अभी कुछ साल वे एक बच्चे को घर में आने दे। उससे एक तो उसका फिगर खराब होने का डर या फिर उसकी नौकरी का भी सवाल था।"[6] इससे हमें यह पता चलता है कि किस तरह मनुष्य केवल भौतिकवादी बनता चला जा रहा है। जिसके चलते वह अपने रिश्ते–नातों को भी भूलने लगा है।

'खाली' नामक कहानी में भी राकेश जी ने दांपत्य संबंधों में आयी रिक्तता का मुख्य कारण पति–पत्नी के स्वभाव भिन्नता को माना है। इस कहानी में जुगल और तोषी एक दांपत्य है। जुगल का स्वभाव थोडा चिडचिडा और शक करनेवाला है। तोषी इस स्वभाव के कारण परेशान बनी हुई है। जुगल ने सभी से अपना नाता तोड दिया है। "जुगल को उसके मायके के लोगों से चिढ थी, अपने घर के लोगों से चिढ थी, पास पडोस के लोगों से चिढ थी, हर आने–जाने वाले से चिढ थी। कभी–कभी तो लगता था कि उस आदमी को सिवाय अपने हर एक से चिढ है, बल्कि अपने आप से भी चिढ है।"[7] तोषी सबसे मिल जुलकर रहना चाहती है। जुगल की संदेह वृत्ति से वह तंग आ चुकी है। तोषी के पहने कपडों पर भी जुगल हर समय टिप्पणी करता रहता है। दोनों हर समय एक दूसरे को हराने में लगे हुए है। प्रेम और यौन संबंधों का प्रभाव भी दांपत्य जीवन में दरारे उत्पन्न करता है। संबंधों की संतुष्टी न होने से पति–पत्नी में दूरियाँ उत्पन्न होने लगती है। कभी कभार तो दांपत्य जीवन केवल शारीरिक संबंधों तक ही सीमित रहता है। 'फौलाद का आकाश' इस कहानी में मीरा और रवि के बीच का प्रेम केवल शरीर तक ही सीमित है। वह कभी भी मन से जुड नहीं पाते हैं। मीरा रवि के शारीरिक भूख को समझती है। "उसके हाथ मीरा के शरीर की गोलाइयों के मसलने लगते हैं। और मंजिल दर मंजिल शारीरिक निकटता की हदें पार होती जाती है। आखिर जब पसीना–पसीना होकर वह अलग हो जाता है तब मीरा को लगता है जैसे अब भी लिखते–लिखते हाथ थक जाने से उसने हाथ हटा दिया है।"[8]

दांपत्य जीवन में किसी अन्य व्यक्ति का प्रवेश हो जाने से भी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती है। जैसे 'क्वार्टर' नामक कहानी में शंकर और राधा के बीच तनाव उत्पन्न होने का मुख्य कारण मिसेज शर्मा और मिसेज लल्ला है। शंकर का झुकाव मिसेज शर्मा की ओर है। वह हर समय मिसेज शर्मा को निहारता रहता है। यह बात राधा को बुरी लगती है। जिससे इन दोनों का पारिवारिक जीवन समस्याओं से घिरा रहता है। हर पल संदेह वत्ति बनी रहती है। मरूस्थल, ग्लास टैंक, सुहागिनें तथा गुंझल इन कहानियों में भी राकेश जी ने इसी बात को उठाया है। आज पति–पत्नी का रिश्ता संदेह की दिवारों से घिरा हुआ है। साथ में अतिरिक्त काम–वासना से दांपत्य जीवन में किसी तिसरे व्यक्ति का प्रवेश हो रहा है। जो दांपत्य जीवन को तहस–नहस करने लगा है। इसीके साथ नारी की आर्थिक स्वतंत्रता, पारिवारिक बोझ तथा अकेलेपन के कारण भी दांपत्य जीवन में दरारें उत्पन्न होने लगी है।

सारांश रूप में हम कह सकते है कि राकेश जी ने अपनी कहानियों में दांपत्य जीवन में आनेवाली समस्याओं को रेखांकित किया है। साथ में इन समस्याओं के पिछे के कारणों को भी पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। आधुनिक समय में रिश्ते नातों से ज्यादा खुद के स्वार्थ को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है। पति–पत्नी के वैवाहिक संबंधों में तणावपूर्ण माहौल बना हुआ है। दोनों भी खुद के अस्तित्व की रक्षा के पिछे भागते नजर आ रहे हैं। परिवार से भी महत्त्वपूर्ण पैसे को माना जाने लगा है। तरक्की के लिए खुद के घर की इज्जत भी निलाम की जा रही है। वैवाहिक जीवन केवल औपचारिक बना हुआ है। पति–पत्नी के मानसिक और भावनिक संबंधों की जगह शारीरिक संबंधों ने ली है। इसके चलते दांपत्य जीवन तणावपूर्ण बना हुआ है। इन बनते–बिगडते पति–पत्नी के रिश्ते नातों का लेखा–जोखा राकेश जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. सं. देवीशकर अवस्थी – नयी कहानी संदर्भ और प्रकृति, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1973, पृष्ठ 191

2. डॉ. रघुवीर सिन्हा–हिंदी कहानी साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, अक्षर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1977, पृष्ठ 62
3. मोहन राकेश – मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, एक और जिदगी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1994, पृष्ठ 279
4. मोहन राकेश – मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, गुंझल, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1994, पृष्ठ 386
5. मोहन राकेश – मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, फौलाद का आकाश, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1994, पृष्ठ 116
6. मोहन राकेश – मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, सुहागिनें, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1994, पृष्ठ 154
7. मोहन राकेश – मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, खाली, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1994, पृष्ठ 30
8. मोहन राकेश – मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, फौलाद का आकाश, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1994, पृष्ठ 114

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com